ECONOMIC DEPRESSION

विश्वव्यापी आर्थिक मंदी : कारण, विस्तार, प्रभाव

1925-29 के काल में युद्धोत्तर विश्व का पुनर्निर्माण समस्त विश्व के लिए सुखद अनुभव था, परंतु 24 Oct. 1929 को अमेरिका के प्रसिद्ध शेयर बाजार वालस्ट्रीट में शेयरों के मूल्य में अचानक आई गिरावट ने "युद्धोत्तर अभिवृद्धि" के रहस्य पर से पर्दा हटा दिया जिसके पश्चात् समस्त विश्व अभूतपूर्व आर्थिक मंदी के चपेट में आता चला गया। यह आर्थिक इतिहासकारों के लिए रिक्टर पैमाने पर नापा गया इतिहास का सबसे बड़ा भूकम्प था। 24 अक्टू० 'वित्तीय इतिहास का सबसे बुरा दिन' बन गया तथा इस वृहस्पतिवार को 'काला वृहस्पतिवार' के नाम से अभिहित किया गया। इस दिन जिस भयानक दुःस्वप्न की शुरुआत हुई उसका खात्मा 1933 में जाकर हो सका। क्रय शक्ति के बुनियादी असमान वितरण ने "प्रचुरता के मध्य गरीबी" की परिकल्पना को सही साबित कर दिखाया था। यह पूंजीवाद के सिद्धांत पर प्रहार था, जिसमें मुक्त व्यापार प्रणाली के तहत् प्रतियोगी उद्यम द्वारा लाभ की इच्छा से अत्यधिक उत्पादन पर सारा जोर दिया जाता था एवं समझा जाता था कि अत्यधिक उत्पादन से गरीबी को दूर किया जा सकता था।

अमेरिका एवं कनाडा की कृषि क्षेत्र ने सर्वप्रथम आनेवाले प्रलय को मद्दसूस किया। 1926 के पश्चात् चूंकि यूरोप में कृषि उत्पादन में वृद्धि होने लगी थी सम्पूर्ण उत्तरी अमेरिका में कृषि उत्पादों की कीमतों में गिरावट प्रारम्भ हुआ। संसार जिस बालू की भीत पर निर्मित हो रहा था, उसका पर्दाफाश होने वाला था। 24 अक्टू० को वालस्ट्रीट में शेयरों की कीमतों में गिरावट प्रारम्भ होने के बाद बैंकों तथा सरकार के लाख प्रयासों के बावजूद नवम्बर के शुरु में अल्पकालिक सुधारों के सिवा स्थिति बदतर होती गयी। शेयरों की बिक्री की होड़ लग गयी। अक्टू० के अन्त तक अमेरिकी निवेशकों को 40000 मिलियन डॉलर का घाटा हुआ। शेयर बाजार के बाद बैंकों पर बिजली गिरी। 1929 के अंत से लेकर 1932 के बीच अमेरिका के करीब 5096 बैंकों का दिवाला निकल गया। धीरे-2 सारी अर्थव्यवस्था चरमरा गयी तथा गरीबी, बेकारी एवं भूखमरी बढ़ने लगी। राष्ट्रीय आय घटकर आधी हो गयी। आयात एवं निर्यात दोनों काफी घट गया।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था नाजुक अवस्था

होती है जिसमें एक गड़बड़ी का असर समूची दुनिया पर पड़ता है। वालस्ट्रीट संकट ने उस विश्वास को हिला दिया जिसपर युद्धोत्तर विश्व का पुनर्निर्माण हो रहा था। अमेरिका ने यूरोपीय देशों को कर्ज देना बंद कर दिया तथा वस्तुओं के बदले नकद अर्थात् स्वर्ण के रूप में कर्ज अदायगी को कहा। 1930 में Hawley-Smot Act द्वारा अमेरिका ने भारी मात्रा में आयात कर लगा दिए। अमेरिका के इस कदम ने यूरोप में आर्थिक संकट को निश्चितप्राय बना दिया। जर्मनी का पुनर्निर्माण अमेरिकी शह पर हो रहा था। अब उसे विदेशी कर्जों की सहायता के बिना वार्षिक क्षतिपूर्ति की राशि, विदेशों से लिए गये कर्ज का ब्याज तथा बजट में छः करोड़ पौंड घाटे का सामना करना पड़ा। जर्मनी एवं आस्ट्रिया ने साथ मिलकर क्षेत्रीय समझौता करना चाहे पर फ्रांस, इटली एवं अन्यों ने इस प्रयास पर पानी फेर दिया। May 1931 में आस्ट्रिया का सबसे बड़ा गैर सरकारी बैंक जिसमें आस्ट्रिया की दो-तिहाई सम्पत्ति जमा थी, दिवालियापन की स्थिति में पहुंच गया। धीरे-2 अन्य बैंक बंद होते चले गये। कल-कारखाने बंद होने लगे जिसका असर बेरोजगारी में वृद्धि के रूप में देखा गया।

जुलाई 1931 तक आर्थिक मंदी ने युद्धकाल के सर्वाधिक औद्योगिक राष्ट्र ब्रिटेन को भी अपने चपेट में ले लिया। ब्रिटेन का विदेशी व्यापार काफी कम हो गया। बैंक ऑफ इंग्लैंड से प्रतिदिन $2\frac{1}{2}$ मिलियन पौंड धन-निकासी हो रही थी जिससे कि ब्रिटेन में सोने की कमी होने लगी। मजबूरन ब्रिटेन को अपना स्वर्णमान त्यागना पड़ा जिसका गहरा प्रभाव अन्य देशों पर पड़ा। विदेशों में कीमतें और गिर गई।

आर्थिक संकट से निजात पाने के लिए सभी राष्ट्रों ने मिलकर तथा स्वतंत्र रूप से हाथ-पाँव मारे। सभी देशों ने कड़ा मुद्रा-नियंत्रण आरम्भ किया, आयातों पर रोक लगाया तथा मंदी पर नियंत्रण हेतु कठोर कानून लागू किये। क्षेत्रीय प्रबंध भी किए गये। ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के सदस्यों ने 1932 में ओटावा समझौता किये। जुलाई 1932 में लोसान में सभी देशों ने मिलकर सम्मेलन किया तथा संकट को दूर करने हेतु कोशिशें की गयी। राष्ट्रसंघ ने जून 1933 में लन्दन में एक प्रयास किया जिसमें 67 देशों ने भाग लिया किंतु मुद्रा के स्थिरीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में बाधाओं को हटाने हेतु

Scanned with CamScanner

बातों को लेकर आम सहमति न बन पायी और सम्मेलन असफल हो गया। फिर भी लंदन सम्मेलन ने आर्थिक संकट दूर करने के रास्ते सुझा दिए जिसपर कई राष्ट्रों ने विचार किया। धीरे-2 कल कारखाने बंद रहने से माल का स्टॉक समाप्त हो गया। कारखाने पुन: चलने लगे। मुद्रा प्रसार की नीति से मुद्रा का अवमूल्यन हुआ जिससे कि वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हुई और आर्थिक संकट स्वत: समाप्त हो गया।

आर्थिक संकट के कारण जनता के सभी वर्गों को बेकारी, भुखमरी आदि संकटों का सामना करना पड़ा। मजदूर बेरोजगार थे, कृषक कृषि-उत्पादों के मूल्यों में आई भारी गिरावट से परेशान थे, पूंजीपति वर्ग कारखानों के बंद हो जाने से तथा मध्यम वर्ग शेयरों के मूल्य में आयी गिरावट से परेशान थे। आर्थिक मंदी ने करीब चार वर्षों तक घोर आर्थिक अराजकता फैलाए रखा। इतिहासकार 'आर्थर लुई" के शब्दों में — यह कोई साधारण मंदी न थी बल्कि आधुनिक इतिहास में अपने दीर्घ विस्तार एवं कठोरता सभी दृष्टियों में सर्वाधिक भयानक थी।'

आर्थिक संकट ने पिछले दो शताब्दियों में विकसित आर्थिक व्यवस्था - पूँजीवाद' - के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया। संकट एक ऐसे समय उपस्थित हुआ जब सम्पूर्ण विश्व अपनी युद्धोत्तर प्रगति पर संतोष प्रकट कर रहा था। अत्यधिक उत्पादन गरीबी दूर करता है - यह सम्पूर्ण विचारधारा ही प्रश्नों के दायरे में आ गई। संसार के सामने अभाव को दूर भगाने से भी बड़ी समस्या थी - गरीबी हटाने एवं धन के समान वितरण की। बेरोजगारी तथा अति आर्थिक असमानता की बुराइयों से लड़ने में "प्रतियोगी पूंजीवाद तथा उदारवादी प्रजातंत्र' असफल रही थी जिससे 'समाजवाद' के पलने बढ़ने के लिए जमीन तैयार हो गयी।

पूंजीवाद की प्रमुख विशेषता - मुक्त व्यापार प्रणाली - को आर्थिक मंदी ने जबर्दस्त क्षति पहुंचायी। घोर पूंजीवादी देश अमेरिका तथा ब्रिटेन ने राष्ट्रीय उद्योगों तथा कृषि को संरक्षण देने के उद्देश्य से भारी टैक्स लगाये। अमेरिका ने 1930 में हॉले-स्मूट एक्ट पारित किया तथा ब्रिटेन ने भी औद्योगिक संरक्षण अधिनियम पास कर आयात हतोत्साहित किया। यह संकुचित आर्थिक राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-वाणिज्य के लिए अहितकर था।

आर्थिक मंदी से अप्रभावित सोवियत रूस 'समाजवाद' को पूंजीवाद के विकल्प के रूप में प्रचारित कर रहा था

Scanned with CamScanner

सोवियत संघ से प्रभावित कई देशों में 1930-39 के काल में समाजवादी विचारधाराओं का प्रचार प्रसार हुआ। ब्रिटेन तथा अमेरिका में भी समाजवाद के प्रति झुकाव देखा गया। समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार के कारण यह पूरा दशक ही 'गुलाबी दशक" के नाम से जाना जाता है। रूस की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति पूँजीवाद से उकताए राष्ट्रों के लिए आदर्श बन गयी।

आर्थिक मंदी ने कई तरह से कई प्रकार से उदारवादी प्रजातंत्र, जो पूँजीवाद का पोषक था, को कमजोर किया। यह राजनीतिक व्यवस्था स्वतंत्रता के मूल मंत्र में विश्वास करती थी और इसी कारण राज्य व्यापार-वाणिज्य में अहस्तक्षेप अर्थात् 'लैसेज फेयर' सिद्धांत को अहमियत देता था। किंतु मंदी दूर करने के लिए प्रत्येक राष्ट्रों के सरकारों ने आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप किया। इससे यह सिद्धांत (लैसेज फेयर) अमान्य हो गया। शासकीय नियंत्रण में वृद्धि ने निरंकुश एवं 'सर्वसत्तावादी सरकारों" की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

आर्थिक मंदी की मार से त्रस्त जर्मनी में हिटलर का 'अधिनायकतंत्र' स्थापित हो गया। जर्मनी की तरह कई यूरोपीय राज्यों में 'अधिनायकतंत्र' किसी न किसी रूप में स्थापित हो गया। अमेरिका में रूजवेल्ट सरकार को बहुत अधिकार थे। इसी प्रकार आस्ट्रिया, स्पेन, हंगरी, युगोस्लोवाकिया, पोलैंड, पुर्तगाल, यूनान, बुल्गारिया, एस्टोनिया, लाटविया तथा रूमानिया आदि देशों में भी किसी न किसी रूप में अधिनायक तंत्र की लहर आ गई।

जापान एवं इटली में सैन्यवाद के उदय का एक प्रमुख कारण आर्थिक मंदी थी। आर्थिक मंदी से जापान पर विदेशी व्यापार आधा हो गया जिससे प्रेरित होकर 1931 में मंचूरिया पर आक्रमण कर शोषण करने लगा। इसी प्रकार इटली में मुसोलिनी ने आर्थिक समस्याओं से तंग आकर इथोपिया को धर दबोचा। जापान एवं इटली के ये कारनामे राष्ट्रसंघ की विफलता में सहायक बने।

आर्थिक मंदी ने 'अन्तर्राष्ट्रवाद' की विचारधारा पर भी हमला किया। सभी राष्ट्रों ने संकुचित राष्ट्रीयता का परिचय दिया तथा संकट की घड़ी में अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की तरफ से अपना ध्यान हटा लिया। जापान एवं इटली के आक्रामक रूखों के बावजूद ब्रिटेन ने "सामूहिक सुरक्षा" के लिए कुछ नहीं किया। अपने आर्थिक हितों को लेकर ब्रिटेन एवं फ्रांस में निरंतर अनबन

Scanned with CamScanner

होती रही। इससे राष्ट्रसंघ कमजोर हुआ तथा जापान, इटली एवं जर्मनी के आक्रामक रवैये के विरुद्ध कोई सशक्त कदम नहीं उठा सका। ब्रिटेन एवं फ्रांस की तुष्टिकरण की नीति ने द्वितीय विश्वयुद्ध को अपरिहार्य बना दिया।

इस प्रकार आर्थिक मंदी का प्रभाव महज आर्थिक जगत तक सीमित नहीं रहा। इसने उन सारे मूल्यों एवं सिद्धांतों को हिलाकर रख दिया जिसका विकास पिछली शताब्दियों में हुआ था। 'उदारवादी प्रजातंत्र, प्रतियोगी पूंजीवाद एवं अन्तर्राष्ट्रवाद' — यूरोपीय सभ्यता के सूचक इन तीनों विचार-धाराओं पर आर्थिक मंदी ने चोट की। महायुद्ध के दौरान से ही इन प्रमुख विचारधाराओं पर प्रहार हो रहे थे, आर्थिक मंदी ने इसे और व्यापक तथा गहरा बना दिया। यह यूरोपीय सभ्यता के पतन का सूचक था। अब विश्व के सामने नये विकल्प थे— निरंकुश अधिनायकतंत्र या सर्वसत्तावाद, साम्यवाद, एवं संकुचित पृथक राष्ट्रवाद।' अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सौहार्द की अनदेखी द्वितीय महायुद्ध के लिए मार्ग बना रही थी। महायुद्ध के बाद ही यूरोप एवं विश्व के पुनरुत्थान की प्रक्रिया शुरू हो सकी।